विनोवा भावे और मार्क्सवाद : एक तुलनात्मक विवेचना

*डॉ. शक्ति सिंह शेखावत

शोध सारांश

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य को देखे तो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संघर्ष और अशान्ति की स्थिति ही दिखाई देगी है। यह संघर्ष और अशांति हिंसा के रूप में प्रकट होकर हत्या, दंगे, गृहयुद्ध और दो या अधिक देशों के मध्य युद्ध में परिणत होगी रहती है जिसको रोकने और नियंत्रित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर नागरिक समाज और शासन द्वारा वहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठन विशेषकर संयुक्त राष्ट्र संघ शांति हेतु प्रयास करता है जिसमें सफलता और असफलता का मिश्रित परिणाम मिलता रहता है और कभी कभी तो और भी बड़ी हिंसा के द्वारा संघर्षो का निपटारा किया जाता है,ऐसी स्थिति में मानवता के अस्तित्व पर संकट उत्पन्न होता रहता है। विचारको ने समय समय पर समाज में संघर्ष और अशान्ति को समाप्त करने के लिए चिंतन के द्वारा समस्याओं के कारणों और इसके विश्वसनीय निदान हेतु विचार प्रदान किये है। जब समस्याओं के मूल में आर्थिक विषमता की बात हो तो विषमता के निदान से शोषण मुक्त समाज के निर्माण के लिए वर्ग विहीन राज्य विहीन समाज की परिकल्पना द्वारा कार्ल मार्क्स प्रदत्त साम्यवाद अपना एक वैचारिक दृष्टिकोण प्रदान करता है l मार्क्स के द्वारा प्रदत्त साम्यवादी चिंतन में वर्ग संघर्ष, हिंसात्मक क्रांति, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद और इसके वैचारिक आधार पर निर्मित सोवियत संघ, चीन, उत्तर कोरिया इत्यादि व्यवस्थाओं के अतिवाद, सत्ता का केंद्रीयकरण, तानाशाही, लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन के साथ साथ हिंसात्मक क्रियाकलापों ने मानवतावादी चिंतन को इसका विकल्प प्रस्तुत करने हेतु प्रोत्साहित किया और इसी के परिणामस्वरूप विकल्प के रूप में गांधी,विनोबा का शांति, अहिंसा, प्रेम, सद्भाव, समन्वय और सहयोग के आधार पर समाज परिवर्तन का दृष्टिकोण आकृष्ट करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में मार्क्सवाद और विनोबा भावे द्वारा प्रस्तुत समाज परिवर्तन के चिंतन का तुलनात्मक विवेचन करने का एक प्रयास किया गया है।

संकेताक्षर - विनोवा, मार्क्सवाद, सर्वोदय, अहिंसा, क्रांति, भूदान, शिवत्त्व, विश्वस्तवृत्ति, तत्त्वज्ञान

परिचयात्मक

आधुनिक वैश्विक पटल पर बीसवीं शताब्दी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक

विचारधाराओं के मध्य तीव्र संघर्ष का युग रहा है। इस वैचारिक संधर्ष के मध्य औद्योगिकरण, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, पूँजीवाद तथा आर्थिक-सामाजिक विषमताओं ने विभिन्न वैचारिक आंदोलनों और संघर्षो को जन्म दिया। इसी पृष्ठभूमि के अंतर्गत पश्चिम में मार्क्सवाद का उदय हुआ जिसने पूँजीवाद का मुखर विरोध करते हुवे हिंसक क्रांति के माध्यम से वर्ग विहीन - राज्य विहीन समाज के निर्माण से सामाजिक परिवर्तन का दर्शन प्रदान किया। जबकि भारत में गांधी-विनोबा के नेतृत्व में मार्क्सवाद के मूल सिद्धान्त " अब तक के समस्त समागों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है।"[1] के विपरीत युद्ध और हिंसात्मक क्रांति की बजाय वर्तमान सामाजिक स्थिति, जिसका आधार असमानता, संघर्ष और मतभेद है, बदलकर समानता और सहयोग के आधार पर स्थापित नहीं की जाती मानव की मुक्ति नहीं हो सकती ।[2] अर्थात सामाजिक-आर्थिक प्रगति तब तक संभव नहीं जब तक जीवन के प्रति जनता के दृष्टिकोण में परिवर्तन न हो। मार्क्सवाद समाज को आपसी वर्ग संघर्ष और भौतिकता की दृष्टि से देखता है, जबकि विनोबा भावे समन्वय और आध्यात्मिकता की दृष्टि से देखते हैं। मार्क्सवाद के अनुसार समाज एक यांत्रिक संरचना है जबकि विनोबा के अनुसार समाज एक जीवंत नैतिक इकाई है।

वर्ग संघर्ष बनाम वर्ग समन्वय

मावर्सवाद के दर्शन का मूल आधार आर्थिक असमानता का सिद्धांत शोषक वर्ग एवं शोषित वर्ग के आपसी संघर्ष एवं सर्वहारा वर्ग के शोषण पर टिका हुवा है, मार्क्स प्रदत इतिहास की आर्थिक व्याख्या के अनुसार समाज में सदैव दो वर्ग विद्यमान रहते है l एक वर्ग जिस के पास समाज में उपलब्ध सम्पदा पर अधिकार होता है, वह वर्ग "हैव्ज" कहलाता है और दूसरा वर्ग वह है जो कि निर्धन है, सर्वहारा है, "हैव्ज नोट" कहलाता है l मार्क्स के अनुसार हैव्ज वर्ग हमेशा हैव्ज नोट का शोषण करता है और इन दोनों वर्गो में एक संघर्ष की स्थिति रहती है इसे ही साम्यवादी चिंतन में "वर्ग संघर्ष" कहा गया है जबकि विनोबा कहते है कि समाज में कोई भी सर्वथा दरिद्र नहीं है। मलकियत शून्य अर्थात सर्वहारा नहीं है। किसी के पास शरीर शक्ति है, किसी के पास कला है, कोई बुद्धिबली है तो कोई व्यवहार कुशल । इन सबकी अपनी-अपनी शक्तियां भी है। पैसे के समान वह भी सामाजिक संपति ही है।[3] शोषण हीन समानता पर आधारित समाज व्यक्ति की चारित्र्य संम्पन्नता पर, लोकशाही के मूल्यों पर निर्भर है।[4] विनोबा के अनुसार साम्यवाद प्रणीत वर्ग संघर्ष मानव समाज को दो गुटों में बांटकर उनमें से एक को समाप्त कर गरीबों, मजदूरों और गुलामों का राज्य आयेगा, यह इस आदर्श की मान्यता है। लेकिन यह मान्यता जीवन की एकात्मता के विरोध में जाती है। अमीरों की कोई अलग जाति नही हुवा करती। वह तो एक वृत्ति है, दूसरों को चूसने की, अन्याय करने की, स्वार्थ साधने की। यह वृत्ति संकुचित और आत्म केन्द्रित मानवमात्र में पायी जाती है। इसका इलाज ढूंढना होगा। अमीरों को नष्ट कर वह वृत्ति समाप्त नहीं हो सकती।[5]

भविष्य में मानव जाति का जो स्वरूप समाजवाद चाहता है, वह सर्वोदय से भिन्न नहीं है हिंसा और अन्याय का खालिस अभाव जहाँ हो, ताकत के अनुसार काम और जरूरत के अनुसार दाम यानी वस्तुएं जहां मिले ऐसा वह समाज होगा।[6] कांचन मोह मुक्ति और शरीर परिश्रम में ही भारत का उद्धार दिखाई दे रहा है और इसी में साम्यवाद और पूंजीवाद का हल दिखाई दे रहा है। अतः मार्क्सवाद के वर्ग संघर्ष को विनोबा अस्वीकार कर वर्ग समन्वय की अवधारणा प्रस्तुत करते है l

आर्थिक समता : हिंसात्मक क्रांति बनाम सर्वोदय

मार्क्सवाद का उद्देश्य आर्थिक समानता है जबकि सर्वोदय का उद्देश्य मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व यथा शारीरिक, मानसिक, आर्थिक ,आध्यात्मिक का विकास करना है। अर्थात सर्वोदय का दर्शन मार्क्सवाद से व्यापक है। मार्क्सवाद सम्पति एवं पूंजी से उत्पन्न बुराईयों को समाप्त करने के साधन के रूप में हिंसक क्रांति के माध्यम से सम्पति का धनवानो से हरण कर समाज में उसका समान वितरण करने से है जबकि सर्वोदय दर्शन के अंतर्गत विनोबा भावे मानते थे कि यदि समाज के अंतिम व्यक्ति का कल्याण सुनिश्चित हो जाये, तो समग्र समाज का उत्थान स्वत संभव है। विनोबा कहते है कि " हम समाज की विषमता को अहिंसा से ही मिटाना चाहते हैं। समता तो कम्युनिस्ट भी चाहते है, लेकिन उनका समता का ख्याल हमारी कल्पना से भिन्न है।[7]

साम्यवाद की सम्पति को इकट्ठा कर बाँटने की सारी योजनाएँ राज्य व्यवस्था पर बहुत दवाव डालती है और अंतत वे हिंसामिश्र हो जाती है।[8] मार्क्सवाद समाज में आर्थिक विषमता को समाप्त करने के लिए हिंसात्मक क्रांति के माध्यम से धनवानों से सम्पति बलपूर्वक छीनकर गरीबों को बाँटने का दर्शन प्रदान करता है, जिसमें हिंसा, प्रतिहिंसा, सत्ता का केंद्रीयकरण इत्यादि संकट उत्पन्न होते जबकि विनोबा के दर्शन में भूदान यज्ञ और सम्पत्ति दान यज्ञ के माध्यम से सम्पति की विषमता से उत्पन्न बुराइयों को समाप्त करने का प्रयास किया गया है। विनोबा द्वारा प्रारम्भ किया गया भूदान आंदोलन का उद्देश्य भूमि विहीन जनता तो भूमि प्रदान कर सामाजिक और आर्थिक विषमता कम कर समाज में सामाजिक समानता व समरसता की स्थापना करना था । विनोबा ने भूदान के माध्यम से आर्थिक विषमता के विषय को नैतिक दृष्टि से सुलझाने का प्रयास किया जिसके अंतर्गत सम्पन्न वर्ग स्वेच्छा से बिना मुआवजा अपनी अतिरिक्त भूमि दान करे, तो समाज में बिना संघर्ष के समानता की स्थापना की जा सकती है। विनोबा भूदान आंदोलन के द्वारा किस प्रकार भारत से कम्युनिज्म का खात्मा करना चाहते है। यह बात तो निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि भारत में कम्युनिज्य का सबसे बड़ा जवाब भूदान आंदोलन ही है।[9] क्योंकि तत्कालीन समय में तेलंगाना कम्युनिज्म के लिए अहम भूमि तथा लोकतंत्र के प्रयोग के लिए खतरे की घण्टी हो गया। यही विनोबा से भूदान आंदोलन के प्रारम्भ की प्रेरणा मिली।[10]

बिनोवा कहते है कि कम्युनिज्म के उन्मूलन के लिए देश को भूदान आंदोलन को सफल बनाना चाहिए। सरकार तत्काल तो कम्युनिज्म का प्रसार रोक सकती है किन्तु भूमि समस्या के स्थायी हल के बिना वह इसका उन्मूलन नही कर सकती।[11] भूदान चुनौती है काम्युनिस्टों को कि संसार को दिखाना चाहते है कि बिना किसी मुआवजे के भूमिपति अपनी बचत ही जमीन अहिंसात्मक ढंग से समझाने-बुझाने से दान कर सकते है। बोलशेविक क्रांति ने जमीन बलपूर्वक हिंसात्मक उपायों से छीन ली और किसानों में बांटी। भूदान अहिंसा और हृदय परिवर्तन के मार्ग में भूमि बाँट रहा है। भारत में बिना मुआवजे का कम्यूनिस्ट मार्ग नही अपनाया जा सकता ।[12] विनोबा बिना हिंसा के सम्पूर्ण सामाजिक परिवर्तन चाहते थे। वे शांति और क्रांति दोनों चाहते हैं। भूदान के द्वारा सत्याग्रह की शांति और मानवता के प्रति जनता का विश्वास दृढ होगा इससे भारतीय भूमी व्यवस्था में क्रांति होगी।

सामाजिक परिवर्तन : हिंसा बनाम अहिंसा

मार्क्सवाद एवं विनोबा की सामाजिक परिवर्तनों की पद्धतियों का मूलभूत अंतर साधनों में है। मार्क्सवाद हिंसक क्रांति को जबकि विनोबा अहिंसा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते है। बिनोबा का दृढ़ विश्वास है कि हिंसा से उत्पन्न परिवर्तन अस्थायी होता है, जबकि नैतिक और अहिंसक साधनों से प्राप्त परिवर्तन स्थायी होता है। विनोबा मानते थे कि रचनात्मक कार्यक्रम में विश्वास और उस पर अमल किये बिना अहिंसक प्रतिरोध असंभव है।[13] विनोबा का उपाय प्रेम का उपाय है, और उसका आधार मानव के आंतरिक शिवत्व में विश्वास है। कम्यूनिस्टों से अपील करते हुवे विनोबा ने कहा कि मैं उनसे हिंसा के परित्याग की प्रार्थना करता हूँ। यदि वे मेरी बात मान ले तो कम्यूनिज्म के प्रचारार्थ में उनके साथ भारत के कोने कोने में जाने को प्रस्तुत हूँ।[14]

विनोबा हिंसा को स्वीकार नहीं करते वे कहते है कि हिंसा से कोई भी मसला हल नहीं होता। एक मसला हल होता सा दिखेगा तो उसमें से दूसरे दसों नये मसले पैदा होंगे। यह माना जाता है कि गांधीवाद हिंसा वर्जित साम्यवाद है क्योंकि दोनों ही विचार दीन दुखियों के प्रति समर्थन रखते है और आर्थिक विषमता के साथ साथ शोषण के यन्त्र वर्ग और राज्य के प्रति असंतोष रखते है, जबकि विनोबा दोनों विचारों में अहिंसा के आधार पर मानते है कि अहिंसा के बिना एक विचार वैसा ही जैसा कि किसी व्यक्ति का निर्जीव शरीर और दूसरा व्यक्ति जो कि उसका हमशक्ल है वह जीवित है क्योंकि उस विचार में अहिंसा ओतप्रोत है।

मार्क्सवाद एक वैज्ञानिक मिथक

वैचारिक चिंतन धारा में साम्यवाद को वैज्ञानिक समाजवाद के साथ-साथ भौतिकवादी मूल्यों पर टिका होने

के कारण तार्किक वाद-प्रतिवाद द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया के माध्यम से इतिहास की आर्थिक व्याख्या के माध्यम से एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण की विचारधारा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। विनोबा कहते है कि साम्यवाद वैज्ञानिक बुद्धि की भाषा नहीं, व्याकुल बुद्धि ही भाषा है, जबकि साम्यवादी वैज्ञानिक बुद्धि का दावा करते हैं। सर्वसाधारण साम्यवादियों की भूमिका "तुरन्त दान महाकल्याण" की होती है। माता की व्याकुलता उससे अवश्य दिखाई पानी है, लेकिन गुरु माता की कूर्म दृष्टि नही।[15]

विनोबा के अनुसार साम्यवाद खुल्लम खुल्ला एक आसक्ति का विचार होने के कारण उसके तार्किक परीक्षण की मुझे कभी जरूरत नहीं मालूम हुई। यादपि साम्यवादीयों ने उसके चारों तरफ एक लम्बी चौड़ी तत्त्वज्ञान की इमारत खड़ी कर दी है, तथापि तत्त्वज्ञान के नाते उसमे कोई सार नही। क्योंकि वह कारीगरी नहीं बाजीगरी है।[16]

राज्य : शोषण का यन्त्र बनाम रामराज्य

मार्क्सवाद राज्य को शोषण का यन्त्र मानते हुवे राज्य के लोप की अवधारणा प्रतिस्थापित करता है जबकि विनोबा राज्य के अंत की बजाए राज्य सत्ता के अंकुश को समाप्त करने का विचार प्रराान करते हैं। साम्यवादी क्रांति के पश्चात सर्वहारा का अधिनायवाद एक प्रकार से सत्ता का केन्द्रीकरण करता है जबकि सर्वग्रासी सत्ता के रास्ते पर राज्य विलयन का मुकाम कभी आ नही सकता। यदि आज ही हर नागरिक अपनी जिम्मेदारी समझकर बाहरी अंकुश और सत्ता के डर के बदले आंतरिक प्रेरणा से कर्तव्य करना शुरु करे तो आगे चलकर सत्ता का विराट केन्द्रित स्वरूप राज्य शासन का विलय हो सकेगा। जो कम से कम शासन चलाये, वही सर्वोत्तम राज्य व्यवस्था है। राज्य सता का अंकुश भी क्रमशः विलीन होता जायेगा। यह समाजवाद और साम्यवाद का आदर्श है, जो सर्वोदय से मिलता जुलता है।[17] औधोगिक क्रांति के बाद केन्द्रित उद्योगों का जो महाकाय स्वरूप विकसित हुवा है, उसी के फलस्वरूप राज्य सत्ता केन्द्रित और सर्वव्यापी बन गई है, चाहे वह साम्यवादी राज्यों में हो, चाहे तथाकथित लोक सत्ताओ में अपने लिए आवश्यक्तानुसार रखकर शेष सम्पत्ति को समाज की सम्पदा मानते हुवे समाज के काम में लगाने की भावना से उत्पन्न विश्वस्तवृति (ट्रस्टीशिप) ही पूँजीवाद को समाप्त कर सकती है।[18]

विश्वस्तवृत्ति के माध्यम से पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, विषमता एवं शोषण प्रत्येक समस्याओं का शोधन किया जा सकता है। जबकि राज्य सत्ता के अंत की प्रेरणा के साथ रूस में साम्यवाद या समाजवाद के नाम से एक प्रयोग शुरु हुवा है। उसकी मूल कल्पना विश्व व्यापक की गई थी, लेकिन वह टिक ना सकी और बाद में इसे राष्ट्रबद्ध स्वरूप प्राप्त हो गया। केन्द्रीकरण, यन्त्र पूजा, शस्त्र निष्ठा और शोषण-पूँजीवाद की इन चार बातों में से तीन को कायम रखते हुवे चौथी को टालने का प्रयास साम्यवाद कर रहा है। अर्थात यह मोह चक्र है। यह समझना मुश्किल नहीं होता कि पहली तीन बातों के साथ चौथी, टालने पर भी बरबस आ ही

जाती है।[19] मार्क्सवाद राज्य के अन्त की अवधारणा प्रस्तुत करता है,अर्थात अराजकतावादी दर्शन है जबकि विनोबा राज्य को आवश्यक किन्तु सीमित संस्था मानते थे। वे सत्ता के केंद्रीयकरण के विरोधी थे और मानते थे कि जैसे जैसे समाज नैतिकता से विकसित होगा राज्य की भूमिका स्वत सीमित होती जायेगी और यही रामराज्य होगा,यह दृष्टि न तो पूर्ण अराजकता की है ना ही राज्य पूजा की।

वैचारिक जड़ता बनाम गतिशीलता

मार्क्सवाद एक वाद है जिसकी एक वैचारिक परम्परा है, जिसके कुछ निश्चित सिद्धांत है, जिसका एक कठोर अनुशासन है जबकि विनोवा कहते है कि जो मानव के दुख निवारण का कायल होता है, वह कभी तर्क प्रधान दर्शन का ढांचा , वाद या आइडियोलोजी तैयार करने में नहीं लगता। आगे चलकर यही की स्वतंत्र चेतना मनुष्य के लिए पंजर (पिंजड़े) बन जाते है। प्रवाही जीवन के सहज विकास में रूकावट डालते है। बिनोबा, गाधी की जीवन व्यापी खोजों से सदा के लिए परिपूर्ण दर्शन निर्माण करना चाहे तो इन खोजो का प्राण ही निकल जायेगा।[20] मार्क्सवाद में वैचारिक प्रतिबद्धता के नाम पर जड़ता है जबकि विनोबा का विचार दर्शन मानवता के हित में सदैव परिवर्तनीय है।

निष्कर्ष

समाज परिवर्तन के दोनों वैचारिक दर्शन में आर्थिक विषमता को समाप्त कर एक वर्ग के द्वारा दूसरे वर्ग का शोषण ना हो राज्य की सत्ता का मनुष्यतत्त्व पर आरोहण ना हो का विचार किया गया है अर्थात दोनों विचारधाराओं में बहुत समानता है लेकिन दोनों दर्शनों में साधनों का मूल अंतर होने के साथ साथ बहुत सारवान मतभेद भी है,ऐसी विभिन्न वैचारिक एवं साधनों की भिन्नताओं के बावजूद विनोबा कम्यूनिस्टों के मित्र है। उनके प्रति उनके मन में कोई नाराजगी या दुर्भाव नहीं है। किन्तु भारत के करोड़ों गरीब दुखियों है दुख दर्द को मिटाने के लिए कम्यूनिस्टों के उपायों में विश्वास नही रखते।

विनोबा के अनुसार दुनिया में अगर किन्ही दो शक्तियों का मुकाबला होने वाला है तो वह साम्यवाद और सर्वोदय विचारों में होने वाला है। क्योंकि इसमे साम्य भी बहुत है और विरोध भी उतना ही है। । हमे इस सर्वोदय विचार को सिद्ध करना होगा कि कांचन युक्त समाज रचना हो सकती है, सत्ता रहित समाज बन सकता है। चाहे छोटे पैमाने पर ही क्यों न हो, हमें ऐसा नमूना दिखाना होगा। तभी साम्यवाद के मुकाबले टिक सकेंगे।[21] विनोबा भारत के लिए कम्यूनिस्ट आदर्श और साधन उपयुक्त नही मानते क्योंकि कम्यूनिस्टों ने हिंसात्मक कार्यवाहियो और हत्याओं में भाग लिया है जिससे उनकी सारी सेवाएं व्यर्थ हो जाती है। अर्थात विनोबा और मार्क्सवाद दोनों का लक्ष्य शोषणमुक्त समाज की स्थापना करना है किन्तु उनके साधन और मार्ग दोनों एकदम भिन्न है। विनोबा शांति, प्रेम, अहिंसा, नैतिकता और ईश्वर में विश्वास एवं धर्म में

आस्था रखते हुये सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रस्तुत करते है जबकि मार्क्स का रास्ता वर्ग संघर्ष, क्रांति, हिंसा, अधिनायकवाद, ईश्वर एवं धर्म में अनास्था रखते हुव परिवर्तन करने का है।

*** सह आचार्य,**
राजनीति विज्ञान विभाग
सेठ आर. एल. सहरिया,
राजकीय पीजी महाविद्यालय, कालाडेरा (जयपुर)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मार्क्स, कार्ल एवं एंजेल्स, फ्रेडरिक, कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो,पेंगुइन, लन्दन, 1976,पृष्ठ संख्या,14.
2. मिश्र, डॉ० बाबूराम, भूदान का आर्थिक आधार, नागरी प्रचारिणी सभा, 1957,वाराणसी,पृष्ठ संख्या 34-35
3. टिकेकर, इन्दु, क्रांति का समग्र दर्शन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी,1972,पृष्ठ संख्या 44.
4. वहीं,पृष्ठ संख्या, 48.
5. वहीं, पृष्ठ संख्या,05
6. वहीं, पृष्ठ संख्या,29
7. विनोबा, सर्वोदय-विचार और स्वराज्यशास्त्र, सर्व सेवा संघ प्रकाशन,वाराणसी,1956,पृष्ठ संख्या, 92
8. वही,पृष्ठ संख्या, 191.
9. मिश्र, डॉ० बाबू राम, भूदान का आर्थिक आधार, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी,1957,पृष्ठ संख्या 12.
10. वही, पृष्ठ संख्या,19
11 वही, पृष्ठ संख्या, 13-14
12. वही, पृष्ठ.संख्या, 12.
13 वही,पृष्ठ संख्या, 10.
14. वही,पृष्ठ संख्या, 13.
15. विनोबा, सर्वोदय-विचार और स्वराज्य शास्त्र, सर्व सेवा संघ प्रकाशन,वाराणसी,1956,पृष्ठ संख्या, 148.

16. वही, पृष्ठ संख्या,137.

17. टिकेकर, इन्दु, क्रांति का समग्र दर्शन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी,1956,पृष्ठ संख्या,05

18. वही, पृष्ठ संख्या,13

19. वही,पृष्ठ संख्या,178

20. वही,पृष्ठ संख्या, 02

21. कालिन्दी, अहिंसा की तलाश, सर्व सेवा संघ प्रक्रमान, वाराणसी,2019,पृष्ठ संख्या, 122.